# माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल

20 पृष्ठीय

परीक्षार्थी द्वारा भरा जावे ↓

| परीक्षा का विषय | विषय कोड | परीक्षा का माध्यम |
|---|---|---|
| Hindi (General) | 4 0 1 | English |

[redacted] तीर के निशान ↓ से मिलाकर लगायें

[redacted]

परीक्षार्थी द्वारा भरा जावे

अंकों में परीक्षार्थी का रोल नम्बर

| 1 | 4 | 3 | 1 | 3 | 8 | 9 | 3 | 3 |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|

शब्दों में

| [redacted] | [redacted] | तीन | एक | तीन | आठ | नौ | तीन | तीन |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|

नीचे दिये गये उदाहरण अनुसार रोल नम्बर भरें।

| उदाहरणार्थ | 1 | 1 | 2 | 4 | 3 | 9 | 5 | 6 | 8 |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | एक | एक | दो | चार | तीन | नौ | पांच | छः | आठ |

केन्द्राध्यक्ष / सहायक केन्द्राध्यक्ष एवं पर्यवेक्षक द्वारा भरा जावे

क :– पूरक उत्तर पुस्तिकाओं की संख्या अंकों में — शब्दों में —

ख – परीक्षार्थी का कक्ष क्रमाक 502

ग – परीक्षा का दिनाक 14 03 14

परीक्षा का नाम एवं परीक्षा केन्द्र क्रमाक की मुद्रा

**हाई स्कूल परीक्षा** **केन्द्र क्रमाँक-312009**

| पर्यवेक्षक का नाम एव हस्ताक्षर | केन्द्राध्यक्ष / सहायक केन्द्राध्यक्ष के हस्ताक्षर |
|---|---|
| | |

परीक्षक एवं उपमुख्य परीक्षक द्वारा भरा जावे

प्रमाणित किया जाता है कि मूल्याकन के समय पूरक उत्तर पुस्तिकाओं की संख्या उपरोक्तानुसार सही पाई गई होलो क्राफ्ट स्टीकर क्षतिग्रस्त नहीं पाया गया तथा अन्दर के पृष्ठों के अनुरूप मुख्य पृष्ठ पर अकों की प्रविष्ठी एव अकों का योग सही है।

निर्धारित मुद्रा : नाम, पदनाम, मोबाईल नम्बर, परीक्षक क्रमाक एव पदाकित सस्था के नाम की मुद्रा लगाए।

| उप मुख्य परीक्षक के हस्ताक्षर एव निर्धारित मुद्रा | परीक्षक के हस्ताक्षर एव निर्धारित मुद्रा |
|---|---|
| Y.K.[illegible]YAY 9770430 | J. RaJPut 7710015 11 |

C.S.TIWARI
9770415

केवल परीक्षक द्वारा भरा जावे।

प्रश्न क्रमाक के सम्मुख प्राप्ताकों की प्रविष्ठी करें।

| प्रश्न क्रमाक | पृष्ठ क्रमाक | प्राप्ताक (अकों में) |
|---|---|---|
| 1 | | |
| 2 | | |
| 3 | | |
| 4 | | |
| 5 | | |
| 6 | | |
| 7 | | |
| 8 | | |
| 9 | | |
| 10 | | |
| 11 | | |
| 12 | | |
| 13 | | |
| 14 | | |
| 15 | | |
| 16 | | |
| 17 | | |
| 18 | | |
| 19 | | |
| 20 | | |
| 21 | | |
| 22 | | |
| 23 | | |
| 24 | | |
| 25 | | |

कुल प्राप्ताक शब्दों में | कुल [illegible] अकों में

Laser/Inkjet/Copier Label A4ST-16 99.1x33.9mmx16

deli mat

प्रश्न क्र

## प्रश्न (1) का उत्तर

उत्तर-(i) ब्रह्मानन्द
उत्तर-(ii) पारिवारिक
उत्तर-(iii) रामचरितमानस
उत्तर-(iv) साए में धूप
उत्तर-(v) अवनति

## प्रश्न क्र (2) का उत्तर

(i)(अ) उत्तर- अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध'

(ii)(ब) उत्तर- समानार्थी

(iii)(स) उत्तर- संस्कृत की उपजाऊ भूमि है

(iv)(द) उत्तर- तत्पुरुष समास

(v)(इ) उत्तर- भारतेन्दु युग

B
S
E

3 [ ] + [ ] = [ ]
योग पूर्व पृष्ठ पृष्ठ 3 के अंक

BOARD OF SECONDARY EDUCATION MADHYA PRADESH BHOPAL
मध्यप्रदेश

प्रश्न क्र

प्रश्न क्र. (3) का उत्तर

उत्तर -(अ) असत्य

उत्तर -(ब) सत्य

उत्तर -(स) असत्य

उत्तर -(द) असत्य

उत्तर -(इ) सत्य

S
E

प्रश्न क्र (4) का उत्तर

(अ) जो पीड़ा को दुलरा सकता - बरखा गीत

(ब) कन्याकुमारी और हिमालय - भारत के दो छोर

(स) शबरी प्रसंग - डॉ. प्रेम भारती

(द) उपकार मानने वाला - कृतज्ञ

इ) वायुमण्डल है विषैला - तुम वही दीपक बनोगे

BOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPAL

प्रश्न क्र

प्रश्न क्र॰(5) का उत्तर

(अ)
उत्तर – उज्जयिनी मध्यप्रदेश में स्थित है।

(ब)
उत्तर – रचना के आधार पर वाक्य आठ प्रकार के होते हैं।

(स)
उत्तर – हल चलाने वाले और भेड़ चराने वाले प्रायः स्वभाव से साधु होते हैं।

(द)
उत्तर – मीरा के प्रभु 'गिरधर नागर' हैं।

(इ)
उत्तर – 'जाके प्रिय न राम बैदेहि' पंक्ति के रचनाकार गोस्वामी तुलसीदास जी हैं।

B S E

प्रश्न क्र.(6) का उत्तर

उत्तर – सरस्वती पत्रिका के सम्पादन में द्विवेदी जी अपनी पूरी शक्ति लगा देते थे। इसके अतिरिक्त उनके पास जो समय बचता था उसमें वे लेखक लेखन का कार्य करते थे। यद्यपि उन्हें लिखने का कम समय ही मिलता था फिर भी उन्होंने 'सम्पत्तिशास्त्र' नामक पुस्तक लिखी।

5

योग पूर्ण पृष्ठ  पृष्ठ 5 के अंक  कुल

प्रश्न क्र (7) का उत्तर

अथवा

उत्तर – समय बहुत महत्वपूर्ण है। इसकी महत्ता को सर्वत्र दर्शाया गया है। समय के विषय में अंग्रेजी की मशहूर कहावत है– 'समय धन है' किन्तु वास्तविकता तो यह है कि समय धन से भी अधिक मूल्यवान है। धन को तो घटाया बढ़ाया जा सकता है, लेकिन समय न घटता है और न ही बढ़ता है।

प्रश्न क्रमांक (8) का उत्तर

अथवा

उत्तर – निबन्ध की परिभाषा

बाबू गुलाबराय के मतानुसार – निबन्ध उस गद्य रचना को कहते हैं जिसमें सीमित आकार के भीतर किसी विषय का वर्णन या प्रतिपादन एक विशेष निजीपन, स्वच्छंदता, सौष्ठव, सजीवता और सम्बद्धता से किया गया हो।

B
S
E

6 | योग पूर्व पृष्ठ | + | पृष्ठ 6 के अंक | = | कुल अंक

प्रश्न क्र

संस्मरण

प्रश्न क्र (9) का उत्तर

उत्तर - संस्मरण का अर्थ है स्मृति के आधार पर रचना करना। इस गद्य विधा में लेखक अपनी स्मृतियों के आधार पर रचना करते हैं।

संस्मरण लेखकों के नाम — संस्मरण

उपेन्द्रनाथ अश्क — 'अपनी अधिक कम पराई'

रामवृक्ष बेनीपुरी — मील के पत्थर

प्रश्न क्र (10) का उत्तर

उत्तर - आकाश — नभ, गगन

अग्नि — पावक, आग

प्रश्न क्र (11) का उत्तर

उत्तर - ~~केवल~~ = अथवा

उत्तर - आस्तिक — नास्तिक

अनुकूल — प्रतिकूल

प्रश्न क्र. (12) का उत्तर

i) उत्तर - अतुलनीय

ii) उत्तर - मृदुभाषी

प्रश्न क्र (13) का उत्तर

अथवा

1) बन्दर क्या जाने अदरक का स्वाद।

2) अधजल गगरी छलकत जाय।

प्रश्न क्र (14) का उत्तर

अथवा

उत्तर - (i) तुम विद्यालय जाओ।

(ii) क्या मोहन आज दिल्ली जाएगा?

प्रश्न क्र (15) का उत्तर

उत्तर - द्विगु समास की परिभाषा - इस समास में पहला पद संख्यावाची होता है तथा दूसरा पद संज्ञा का होता है। विग्रह करते समय समूह शब्द का अर्थ निकलता है।

प्रश्न क्र. उदाहरण - 1) त्रिभुवन - तीन भुवनों का समूह

2) पंचवटी - पाँच वटवृक्षों का समूह

प्रश्न क्र. (16) का उत्तर

उत्तर- 'कर्मवीर' कविता में कर्म के महत्व को उजागर किया गया है। इस कविता में यह बताया गया है कि जीवन के जो भी चमत्कार हैं सब कर्म का ही फल है। कर्म करने वाला व्यक्ति अपने बुरे समय को भी अच्छे में बदल सकता है।

कर्म से हीन व्यक्ति हर तरह से हीन रहता है। वह भाग्य के भरोसे रहता है। कर्म करने वाला व्यक्ति अपने हर कार्य में सफल होता है। सब जगह उनका नाम होता है।

संसार की बड़ी से बड़ी सफलता के मूल में कर्म छिपा होता है। अतः हम सबको कर्म करते रहना चाहिए।

B
S
E

EDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPAL

प्रश्न क्रमांक (17) का उत्तर

अथवा

उत्तर - कवि दुष्यंत कुमार ने अपनी कविता 'इस नदी की धार में' बताया है कि जीवन की कठिन से कठिन परिस्थित में भी हमें हार नहीं मानना चाहिए। निराशा के गहरे अंधकार में भी आशा की किरण छिपी रहती है।

कवि को दुख में भी आशा की किरण निम्नलिखित जगह में दिखाई देती है।

1) नदी की धार में ठण्डी हवा के समान।

2) सरसता के तेल से भीगी बत्ती वाले दीपक के समान।

3) साँझ की चादर में डूबते हुए सूर्य में।

B
S
E

प्रश्न क्र (18) का उत्तर

उत्तर - वन में विचरण करते हुए भगवान श्रीराम अपने छोटे भाई लक्ष्मण के साथ जंगल की कुटिया में रह रही शबरी की कुटिया पर पहुँचे।

दोनों को अपनी कुटिया पर आया हुआ देखकर शबरी भाव-विभोर हो उठी। कैसे इनकी वन्दना करूँ। इनके स्वागत में क्या गीत गाऊँ, आरती का सामान कहाँ से

BOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPAL

प्रश्न क्र

लाऊँ आदि विचार आने पर वह व्याकुल हो उठती है।

शबरी ने प्रेम से दोनों भाइयों का स्वागत कर उन्हें मृगछाला का पवित्र आसन दिया। उन्हें भोजन के ~~रूप~~ में मीठे बेर केले के पत्तों में परोस दिया। भगवान राम ने बड़े प्रेम से उन बेरों को खाया।

इ प्रकार शबरी ने राम ~~लक्ष्म~~ लक्ष्मण का स्वागत किया।

MPBSE

प्रश्न क्र (19) का उत्तर

अथवा

उत्तर- 'धन और यौवन को क्षणभंगुर कहा गया है'

धन और जीवन ये दोनों किसी के पास स्थायी होकर नहीं रहते है। इनका स्वभाव चंचल है।

आना और जाना इनकी प्रवृत्ति है। ये आज है कल नहीं रहेंगे। धन और और यौवन का स्वभाव अस्थिर है। कोई भी इन्हें अपने पास बांधकर नहीं रख सकता।

इसीलिए 'धन और यौवन' को क्षणभंगुर कहा गया है।

MADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION

प्रश्न क्र. (20) का उत्तर

अथवा

उत्तर – टिहरी बाँध की दो सुरंगों को बन्द कर दिया गया था। शहर में पानी भरने लगा था। सभी लोग अपनी सुरक्षा के लिए इधर-उधर भाग रहे थे। सब लोग सुरक्षित स्थानों पर पहुँचना चाहते थे। इसीलिए टिहरी शहर में आपाधापी मच गई थी।

शहर के सभी लोग अपने सुरक्षित स्थानों की ओर भाग रहे थे पर बुढ़िया अपनी झोपड़ी के सामने ही बैठी थी। उसके पास अपना कोई ठिकाना ही नहीं था।

प्रश्न क्र. (21) का उत्तर

अथवा

उत्तर – जो लोग हँसते नहीं हैं उन्हे तनाव चिन्ता बेचैनी आदि घेर लेते है।

तनाव के कारण मनुष्य में हृदय रोग, पेप्टिक (अल्सर), उच्च रक्तचाप, सिरदर्द आदि रोग घेर लेते है। इससे मनुष्य की शक्ति कमजोर पड़ जाती है। वह अपने जीवन के प्रति निराश हो जाता है।

हँसने से तनाव से मुक्ति मिलती है और कुछ समय बाद इन रोगों से भी छुटकारा पाया जा सकता है।

BOARD OF SECONDARY EDUCATION MADHYA PRADESH BHOPAL

प्रश्न क्र

प्रश्न क्र (22) का उत्तर

उत्तर – 'पायो नाम च्यारु चिन्तामनि'
प्रस्तुत पंक्ति तुलसीदास द्वारा रचित विनय के पद से ली गई है।
भगवान राम के परम भक्त तुलसीदास जी मानते हैं कि संसार के दुःखों से छुटकारा रामनाम के स्मरण से ही सम्भव है। राम-नाम के स्मरण मात्र से ही संसार के बन्धन से मुक्ति मिल सकती है। इसी में मनुष्य का कल्याण है।

'पायो नाम च्यारु चिन्तामनि से कवि का आशय है कि मैंने भगवान राम के नाम की सुन्दर मणि प्राप्त कर ली है। अब मैं अपना सम्पूर्ण जीवन राम के चरण कमलों मे बद बसा दूँगा। भगवान राम नाम की मणि को प्राप्त करने के बाद जीवन मे किसी भी प्रकार के दुःख का सवाल ही नहीं। अब तो सब सुख ही मिलेंगे।

B S E

MADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION

प्रश्न क्र (23) का उत्तर

अथवा

उत्तर – सम्राट अशोक विश्व विजयी सम्राट बनने की कामना लेकर ~~युद्ध~~ युद्ध भूमि पर उतरा था। वह अपने पराक्रम से सम्पूर्ण भारत को जीत कर कलिंग की ओर बढ़ा।

उसने युद्ध जीत कर राजमहल पर अधिकार करना चाहा। किन्तु वहाँ की महारानी निश्छल व्यवहार व्यवहार वाली एक बालिका थी। बालिका द्वारा किए गए मर्मस्पर्शी प्रश्न अशोक के हृदय को छू जाते है। उसका हृदय परिवर्तन हो जाता है। वह कहता है –

"सम्राट अशोक प्रतिज्ञा करता है कि वह किसी से छीनेगा नहीं, किसी को डरायेगा नहीं, किसी को मारेगा नहीं। वह युद्ध और हिंसा से विजय की कामना नहीं करेगा। वह कलिंग की विजयी महारानी अमिता की तरह निश्छल प्रेम एवं व्यवहार से लोगों के हृदय को विजित करेगा।

BOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPAL

प्रश्न क्र

प्रश्न क्र (२५) का उत्तर

संकेत - पायो - - - - - - - - - - - - - - सवायो ||

संदर्भ - प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक वासन्ती के 'मीरा के पद' नामक कविता से लिया गया है। इसकी रचयिता मीराबाई जी हैं।

प्रसंग - इस पद्यांश में राम नाम की महिमा का वर्णन किया गया है।

B
S
E

व्याख्या - कवयित्री मीराबाई कहती हैं ~~कि~~ मैंने राम नाम रूपी रत्न प्राप्त कर लिया है। यह रत्न मुझे गुरु की कृपा से मिला है। मेरे सच्चे गुरु ने मुझे अपनाकर यह रत्न दिया है। इस रत्न के लिए मैं जन्म-जन्मान्तरों से लालायित थी। यह मेरे जीवन भर की पूँजी है, जिसे मैंने अपना सब कुछ खोकर प्राप्त किया है। यह राम रत्न धन तो अमूल्य है। ~~इसे~~ इसे कोई भी चुरा नहीं सकता। यह धन तो रोज-रोज बढ़ता ही जाता है।

विशेष - 1) अनुप्रास, उपमा एवं अलंकारों का प्रयोग हुआ है।
2) राजस्थानी एवं गुजराती भाषा का मिश्रण।
3) राम-नाम की महिमा का गुणगान है।

योग पूर्व पृष्ठ + पृष्ठ के अंक = कुल अंक

मध्यप्रदेश

BOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPAL

प्रश्न क्र (25) का उत्तर

(i) उत्तर - शीर्षक - 'राष्ट्रीय एकता'

(ii) उत्तर - सारांश - भारत विविधताओं वाला देश होने के बावजूद यहाँ की एकता अद्वितीय है। यहाँ धर्म, जाति, सम्प्रदाय, संस्कृति अलग होने के बावजूद लोग मन के स्तर पर एक हैं।

(iii) उत्तर - भारत की मुख्य विशेषता 'अनेकता में एकता' है।

(iv) उत्तर - अनेकता का विलोम - एकता
मजबूत का विलोम - कमजोर

प्रश्न क्र (26) का उत्तर

(i) उत्तर - शीर्षक - ~~'प्राकृतिक सौंदर्य'~~ अथवा 'हरियाली'

(ii) उत्तर - कवि ने हरियाली को मखमल के समान कोमल बताया है।

(iii) उत्तर - सूर्य की किरणों की चमक चाँदी के समान है।

(iv) उत्तर - उपर्युक्त पद्यांश का भावार्थ है कि हरियाली खेतों में फैली है। यह हरियाली मखमल के समान कोमल तथा सूर्य की किरणों के समान बताया गया है।

B
S
F

SECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESH

प्रश्न क्र (27) का उत्तर

27 कृष्ण नगर,
सतना।
14 मार्च, 2014

प्रिय मित्र,
विक्रम, नमस्ते!
यहाँ सब कुशल मंगल है। बहुत दिनों से तुम्हारा कोई समाचार नहीं मिला है। आशा है कि वहाँ भी कुशलता होगी।

प्रिय विक्रम, मुझे यह बताने में अत्यंत हर्ष हो रहा है कि मैं अभी एक सप्ताह पहले कश्मीर गया था। वहाँ की ठंड से तो मेरा शरीर ही जम गया था। जैसा कि कहा जाता है कि कश्मीर धरती का स्वर्ग है, वहाँ की हरियाली फल-फूल, क्यारियों ने तो मेरा मन मोह लिया था। वहाँ के लोग बहुत अच्छे हैं। वहाँ के पहाड़, रंग-बिरंगे शिकारे, तैरते बाग आदि बड़े ही मनोरम दृश्य प्रस्तुत करते हैं। वहाँ के लोगों के दिल की मिठास तथा महक भी सेवों एवं केसर के समान दिल में बस जाती है।

अच्छा तो अब मैं अपना पत्र समाप्त करता हूँ। तुम मुझे शीघ्र ही अपनी कुशलता का पत्र लिखना। चाचा और चाची को मेरा प्रणाम कहना।

पत्रोत्तर की प्रतीक्षा में।

तुम्हारा शुभाकांक्षी,
मोहन

B
S
E

MADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION

प्रश्न क्रमांक (21) का उत्तर

(अ) i)
उत्तर- वृक्षारोपण

रूपरेखा - 1) प्रस्तावना 2) वृक्षों का प्राचीन संस्कृति में महत्व
3) प्रत्यक्ष लाभ 4) अप्रत्यक्ष लाभ
5) वृक्षों का महत्व 6) वृक्षों की कटाई - एक गम्भीर समस्या
7) वृक्षारोपण : समय की पुकार
8) उपसंहार

"श्वास प्राण दे हरता प्रदूषण, देते सबको संकट त्राण।
वृक्ष हितैषी सच्चे जग के, पल-पल करते जन-कल्याण॥"

प्रस्तावना - वनों से पूर्ण देश सिर्फ उसे समृद्ध ही नहीं बनाता बल्कि उसकी शोभा को भी बढ़ाते हैं। वृक्ष और मनुष्य एक-दूसरे पर निर्भर हैं। वृक्षों को प्राणी जीवन का अंग माना गया है। वृक्षों के कारण ही पृथ्वी पर जीवन सम्भव है।

वृक्षों का प्राचीन संस्कृति में महत्व - प्राचीन काल से ही वृक्ष मनुष्य जीवन के मुख्य अंग रहे हैं। भारतीय संस्कृति का भी विकास इन्हीं वृक्षों से हुआ है। अनादिकाल से ही ~~भारत में प्राचीन~~ मनुष्य वृक्षों पर निर्भर रहा है। आश्रम भी इन्हीं वृक्षों एवं वनों की गोद में पले

SECONDARY EDUCATION MADHYA PRADESH BHOPAL BOARD OF SECONDARY EDUCATION MADHYA PRADESH BHOPAL

प्रश्न क्र

बसे है। भारत में पील पीपल के वृक्ष को भगवान वासुदेव का प्रतीक माना गया है। पुराणों और उपनिषदों में भी इनके महत्व को वर्णित किया गया है। कहा भी गया है।

"तरुवर तासु विलंबिये, बारह मास फलन्त।
शीतल छाया गहर फल, पंछी केलि करन्त॥"

<u>प्रत्यक्ष लाभ</u> :- वनों से उद्योग के लिए सामग्री मिलती है। वनों से कई औषधियाँ व कीमती लकड़ियाँ मिलती हैं जिससे दरवाजे, खिड़की आदि बनाए जाते हैं। वन पशुओं के लिए उत्तम चारागाह हैं। वन वन्य प्राणियों के आवास एवं सुरक्षा स्थल हैं। वनों से सरकार को करोड़ों का लाभ मिलता है।

<u>अप्रत्यक्ष लाभ</u> : वनों के वृक्षों से ही वर्षा होती है। वन बाढ़ एवं तापक्रम पर नियंत्रण रखते हैं। वन क्षेत्र में कुओं का जल स्तर ऊँचा रहता है। वृक्षों के होने से रेगिस्तान बनने की सम्भावना नहीं रहती है। सरदार पटेल ने कहा है -

"If expansion of Desert is to be controlled and human civilization is to be prevented then forest must be controlled and prevented."

B
S
E

B S E

<u>वृक्षों की कटाई - अशुभ कार्य</u> :- वर्तमान युग का मानव अपने स्वार्थों की पूर्ति के लिए वृक्षों को काटता जा रहा है। वह इस तथ्य को भूल गया है कि वृक्षों का जीवन परोपकार के लिए होता है। परोपकारार्थ फलन्ति वृक्षाः। वृक्ष हमें निरन्तर हवा, फल-फूल मेवे आदि देते ही रहते हैं।

<u>वृक्षों का महत्व</u> :- वृक्ष मानव का जीवन है। ये मानव की रीढ़ हैं। वृक्ष से ही मनुष्य के प्राण हैं। वृक्ष से स्वच्छ वातावरण मिलता है। इसके सांस्कृतिक, साम्प्रदायिक, सामाजिक महत्व सर्वत्र दिखाई देते हैं।

"वृक्ष धरा के भूषण हैं, करते दूर प्रदूषण हैं।
बंजर धरती करे पुकार, बच्चे कम हों वृक्ष हजार।"

<u>वृक्षारोपण :- समय की पुकार</u> - इसकी उपयोगिता एवं महत्व को जानकर यह साफ हो जाता है कि पृथ्वी पर वृक्षों का होना कितना आवश्यक है। किन्तु लोग अपने स्वार्थ के लिए लगातार इनकी कटाई किए जा रहे हैं। इस संदर्भ में 1950 ई में के० एम मुंशी ने वनों के संरक्षण एवं विकास हेतु वन महोत्सव प्रारम्भ किया था।

उपसंहार :- हमारा यह कर्तव्य बनता है कि हम वन महोत्सव को राष्ट्रीय अथवा सामाजिक त्योहार के रूप में मनाएँ। निष्प्रयोजन पेड़ की डाली को भी न तोड़ें।

"उगता हुआ वृक्ष उभरते हुए राष्ट्र का प्रतीक होता है।"

प्रश्न क्र.

(ब) (iv) प्रदूषण की समस्या

रूपरेखा –

1) प्रस्तावना – प्रकृति ने मानव जीवन को अनेक उपहार दिए हैं फिर भी वह अपने स्वार्थ के कारण इसका गलत उपयोग करता है जिससे प्रदूषण फैल रहा है।

2) प्रदूषण के प्रकार – (i) जल प्रदूषण (ii) वायु प्रदूषण (iii) ध्वनि प्रदूषण (iv) मृदा प्रदूषण

3) प्रदूषण: आज की मुख्य समस्या – प्रदूषण आज की मुख्य समस्या बन गई है। पृथ्वी पर जीवन बनाए रखने हेतु इसका निवारण आवश्यक है।

4) प्रदूषण के कारण

5) प्रदूषण रोकथाम के उपाय – वन संरक्षण, जागरुकता पैदा करना

6) भारत में प्रदूषण की स्थिति

7) उपसंहार – पृथ्वी पर जीवन बनाए रखने के लिए सम्पूर्ण विश्वजनों को मिलकर कार्य करने होंगे एवं इस समस्या का निदान ढूँढना होगा।

B
S
E

BOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPAL